# 2014 सबसे गर्म साल रहा

जब से हमारे पास मौसम के रिकॉर्ड उपलब्ध हैं, यानी 1891 से लेकर आज तक 2014 सबसे गर्म वर्ष रहा है। जापान मौसम विज्ञान एजेंसी के मुताबिक 1981 से 2010 के औसत तापमान की तुलना में 2014 लगभग 0.27 डिग्री अधिक गर्म रहा।

इससे पहले दिसंबर में राष्ट्र संघ विश्व मौसम विज्ञान संगठन ने जनवरी से अक्टूबर 2014 के तापमान के प्रारंभिक विश्लेषण के आधार पर अनुमान लगाया था कि 2014 रिकॉर्ड गर्म वर्ष रहेगा। यूके के मौसम विभाग के आंकड़े भी यही कहते हैं।

2014 की गर्मी के संदर्भ में एक बात और गौरतलब है: एल नीनो की अनुपस्थिति। इससे पहले जो तीन वर्ष सबसे गर्म माने गए थे - 2010, 2005 और 1998 - उन सबमें एल नीनो-दक्षिणी दोलन नामक मौसमी घटना हुई थी जो तापमान को बढ़ाने का काम करती है। एल नीनो-दक्षिणी दोलन के दौरान भूमध्यरैखीय पूर्वी प्रशांत महासागर के सतह का पानी गर्म हो जाता है और इसकी वजह से पानी की गर्मी वायुमंडल में पहुंच जाती है।

यह आश्चर्य का विषय है कि एल नीनो न होने के बावजूद 2014 इतना गर्म वर्ष रहा। मतलब है कि धरती औसतन गर्म होती जा रही है। दरअसल, 2014 का यह उच्च तापमान एक दशक बाद आया है और इस दौरान माना जा रहा था कि तापमान में वृद्धि धीमी हो रही है। वर्ष 1951 से 2012 के बीच औसत वैश्विक तापमान में सालाना 0.12 डिग्री की वृद्धि दर्ज की गई थी जबकि 1998 से 2012 के बीच वृद्धि दर मात्र 0.05 डिग्री सालाना रही थी।

जहां कुछ वैज्ञानिक मान रहे हैं कि तापमान की वृद्धि दर में कमी वास्तविक थी वहीं कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि वृद्धि दर धीमी नहीं पड़ी थी बल्कि सारी गर्मी समुद्रों के पेंदे में जमा होती जा रही थी। लिहाज़ा 2014 की गर्मी एक निरंतर वृद्धि के पैटर्न का ही हिस्सा है। हां, इतना ज़रूर है कि 2014 के उच्च औसत तापमान ने दर्शा दिया है कि जो लोग यह कहने लगे थे कि अब तापमान में वृद्धि धीमी पड़ गई है, वे गलत थे। 2014 का मौसम सिर्फ यह दर्शाता है कि तापमान के मामले में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे मगर रुझान वृद्धि का ही है। ***(स्रोत फीचर्स)***